अ ध्या य - 5

उपसंहार

उषाजी के "पचपन खम्भे लाल दीवारें", "रूकोगी नहीं, राधिका ?" और "शेषयात्रा" ये तीनों उपन्यास नायिका प्रधान है । इनमें नायिका के जीवन का चित्रण करना ही लेखिका का उद्देश्य है । आधुनिक नारी की सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक एवं पारिवारिक स्थिति एवं समस्याओं का लेखिका ने अपने उपन्यासों में सूक्ष्म चित्रण किया है । इन उपन्यासों में पुरूष पात्रों का उल्लेख केवल संदर्भ के लिए ही आ चुका है । अतः यह बात सिद्ध है कि उषाजी के उपन्यास नारी जीवन प्रधान एवं नायिका प्रधान हैं ।

उषाजी के उपन्यासों में विभिन्न वर्गों, स्वभाव-विशेषताओं एवं प्रकृतिवाले नारियों के प्रतिनिधि पात्रों का चित्रण किया है । ये पात्र अपने-अपने परिवेश, समाज, वर्ग एवं संस्कार की सारी विशेषताओं से परिपूर्ण हैं ।

उषाजी ने मुख्यतः आधुनिक, शिक्षित एवं सुसंस्कृत नारी की समस्याओं को सामने रखकर अपनी नायिकाओं का निर्माण किया है । पौर्वात्य एवं पाश्चात्य संस्कारों से प्रभावित तथा दो विरोधी संस्कारों के बीच टूटती नारी की करूण कहानी लेखिका ने कही है । ये नारियाँ समर्थ-सुशिक्षित हैं, परंतु परिवेश और समाज के कारण एवं अपने पर हुए संस्कारों के कारण वे अपनी ही सीमाओं को लांघ पाने में खुद को असमर्थ पाती है । नारी के इस संघर्षमय, करूण स्थिति का एवं उसके सबकुछ चूपचाप सहने से लेकर विद्रोह करके अपने अस्तित्व के निर्माण में सफल होने तक के चरणों की विकासात्मक यात्रा का अत्यंत वास्तववादी चित्रण उषाजी ने किया है ।

उषाजी के तीनों उपन्यासों को सामने रखते हुए यह कहा जा सकता है कि उषाजी का नारी के प्रति दृष्टिकोण न केवल सहानुभूति-पूर्ण है बल्कि काफी परिष्कृत और उदार है ।

उषाजी के इन उपन्यासों में उन्होंने नारी जीवन का यथातथ्य चित्रण किया है । आज की नारी की अहं समस्याओं का बारीकी और गहराई से कलात्मक चित्रण किया है । उषाजी के उपन्यासों की नायिका उत्तरोत्तर विकसनशील दिखाई देती है । "पचपन खम्भे लाल दीवारें" में नायिका सुषमा अपनी जिंदगी के बारे में

...81.

कोई ठोस निर्णय लेने में असमर्थ दिखाई देती है । वह अपने परिवार से अलग होकर अपने सुख का, जिंदगी का नया मार्ग स्वीकार करने की हिम्मत नहीं रखती । अर्थात् सुषमा की समस्या का कोई भी हल नहीं मिल पाता । लेखिका ने अपने इस उपन्यास में नायिका की समस्या के बारे में समाधान की ओर कोई भी संकेत प्रस्तुत नहीं किया है । उनके "रूकोगी नहीं राधिका" इस उपन्यास में नायिका राधिका के, परिवार के दुखपूर्ण मोह-बन्धनों को तोड़कर घर छोड़, जिंदगी के नए और स्वतंत्र मार्ग को अपनाने का संकेत मिलता है ।

"शेषयात्रा" में नायिका अनु पर परिस्थिति ही ऐसी गुजरती है कि न चाहते हुए भी उसे अपनी जिंदगी का रूख बदलना पड़ता है । अनु की समस्या जटिल और करूण है फिर भी वह अपने निरंतर प्रयत्न और परिश्रम से अपनी समस्या को सुलझाने में सफल हो जाती है । "शेषयात्रा" में उषाजी ने नायिका की समस्या की ओर केवल संकेत भर ही नहीं किया है, बल्कि उसके समाधान की औचित्यता को भी दर्शाया है, जिससे पाठक को संतोष हो जाता है । उषाजी के उपर्युक्त तीनों उपन्यासों की नायिकाओं का अध्ययन करते हुए यही लगता है कि यह भिन्न-भिन्न तीन नायिकाएँ न होकर एक ही नायिका के विकासक्रम के तीन रूप हैं । यह बात उपन्यासों के अंत को देखकर स्पष्ट रूप से झलकती है । इस संदर्भ में स्वयं लेखिका के "रूकोगी नहीं, राधिका?" के संस्मरण में व्यक्त किये हुए मन्तव्य दृष्टव्य है, "उपन्यास के अन्तिम पृष्ठ पर राधिका ने एक इंट्यूटिव फ्लैश के दौरान अपनी आगे की यात्रा तय कर ली, एक निर्णय ले डाला । पर सृजनकर्ता के रूप में राधिका की आगे की जिंदगी मेरे लिए समाप्त नहीं हुई । संभव है कि राधिका किसी दूसरे रूप में, दूसरे चेहरे में किसी जगह आ जाए और यह भी संभव है कि राधिका "रूकोगी नहीं, राधिका" के पात्रों तक ही सीमित रहे ।"[53] उषाजी ने नारी के एक प्रतिनिधि पात्र को अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व और अस्तित्व की ओर विकासशील यात्रा में निरंतर अग्रेसर दिखाया है । यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी नारी में आते प्रगतिशील परिवर्तन का इतिहास भी कहता है ।

नारी का अपना एक जगत् होता है, उसमें उसे अनेक बार अपने और दूसरों के सुख के बीच संघर्ष की स्थिति में किसी एक को अपनाना पड़ता है । नारी की प्रकृति की जड़ ऐसी ही है कि वह हमेशा अपने सुख से अधिक दूसरों के सुखों का ही

ज्यादा विचार करती है और यहीं उसके शांति, संतोष और सुख में दरार पड़ जाती है, वह अतृप्ति और असंतोष के कारण निरंतर घुलती जाती है और एक रूग्ण की तरह नाकाम और खोखला जीवनजीती है ।

नारी की समस्या का एक मात्र हल उसका थोड़ा-सा स्वार्थी बन जाना, अपनी जिंदगी की सफलता एवं अपने सुख का विचार करना यही हो सकता है । नारी-मुक्ति, नारी-जागरण और नारी के प्रति न्याय के यही अर्थ हैं । परंतु स्वयं नारी मूलत: कोमल, सहनशील, संकोची और उदार होने के कारण वह अपने सुख का विचार करना अपराध समझती है । नारी की इस स्वाभिमान हीनता, अतिशयोक्ति पूर्ण निस्वार्थ त्यागभावना को कम करवाकर ही उसके सुख का मार्ग ढूँढा जा सकता है ।

प्रतिकूल परिस्थिति में नारी के सामने केवल दो रास्तें होते हैं । एक रास्ता बिलकुल नया, अनजान चुनौतियों और धोखें से भरा हुआ पर वैयक्तिकस्वतंत्रता और व्यक्तित्व विकास की ओर बढ़ता हुआ क्रांति का मार्ग होता है । इसके विपरित दूसरा मार्ग परिस्थिति के साथ समायोजन करते हुए, अपने अंतर के जगत् को दबाते और मारते हुए, संघर्षहीन जीवन का वही घीसा-पिटा मार्ग होता है । पहले मार्ग से जाकर नारी सुखी बन सकती है और दूसरे मार्ग से जाकर दुखी बनती है ।

जिंदगी के नये मार्ग को अपनाने और चुनौतियों को झेलने की ताकद सभी नारियों में नहीं होती । जो नारी इन आवाहनों का स्वीकार कर, संघर्ष-युक्त जिंदगी जीती है उसी की कहानी कहने और सुनने लायक भी होती है । इस दृष्टि से "शेषयात्रा" की अनुका का जीवन सराहनीय है । वह शून्य में से अपने व्यक्तित्व का निर्माण करती है । इसकी तुलना में नायिका राधिका का जीवन भी काफी प्रशंसापूर्ण है । परंतु नायिका सुषमा इस मार्ग को अपनाने में नाकाम रह जाती है । पाठक उसके जीवन को और अंत को पढ़कर एक कसक, कुण्ठा और असंतोष का भाव अनुभव करता है ।

उषा प्रियंवदा का नारी के प्रति दृष्टिकोण :

उषाजी नारी को एक स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में देखती है । पुरूष का सहारा लेना नारी के लिए अनिवार्य

...83.

नहीं है । इसके विपरित पुरूष से अलग उसका स्वतंत्र अस्तित्व है । नारी का जीवन पुरूष से बंधा हुआ न होकर, वह उसका निजी जीवन है, जिसपर केवल उसका ही अधिकार हो सकता है । उसकी कुछ अपनी इच्छाएँ, आकांक्षाएँ, महत्वाकांक्षाएँ और सपनें हैं । नारी की कुछ अपनी समस्याएँ हैं । नारी अपनी इन समस्याओं का समाधान खुद अपने प्रयासों से प्राप्त कर सकती है । नारी अगर निश्चय करें तो उसके लिए असंभव को संभव करना कठिन नहीं है । नारी सामर्थ्यशाली है और अपनी इच्छानुसार जीवन जी सकती है । इस प्रकार उषाजी का नारी के प्रति आशावादी विधायक दृष्टिकोण है ।

पाद टिप्पणियाँ

अध्याय 4 और 5

1. उषा प्रियंवदा "पचपन खम्भे लाल दीवारें"
   पृष्ठ सं. 11 दिल्ली - चतुर्थ संस्करण-1984

2. उषा प्रियवंदा "पचपन खम्भे लाल दीवारें
   पृष्ठ सं. 35

3. -वही-
   पृष्ठ सं. 12

4. -वही-
   पृष्ठ सं. 84

5. -वही-
   पृष्ठ सं. 10

6. -वही-
   पृष्ठ सं. 11

7. -वही-
   पृष्ठ सं. 27

8. -वही-
   पृष्ठ सं. 33

9. -वही-
   पृष्ठ सं. 109

10. -वही-
    पृष्ठ सं. 119

11. उर्मिला गुप्ता - स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ
    पृष्ठ सं. 328 राधाकृष्ण प्रकाशन

12. उषा प्रियवंदा - "रूकोगी नहीं, राधिका ?"
    पृष्ठ सं. 78 दिल्ली - प्रथम संस्करण - 1976

13. -वही-
    पृष्ठ सं. 60

14. उषा प्रियंवदा - "रुकोगी नहीं, राधिका?"
पृष्ठ सं. 78 दिल्ली - प्रथम संस्करण - 1976

15. उषा प्रियंवदा - "शेषयात्रा"
पृष्ठ सं. 27 पटना - प्रथम संस्करण - 1984

16. -वही-
पृष्ठ सं. 31

17. -वही-
पृष्ठ सं. 34

18. -वही-
पृष्ठ सं. 46

19. -वही-
पृष्ठ सं. 51

20. -वही-
पृष्ठ सं. 64

21. -वही-
पृष्ठ सं. 64

22. -वही-
पृष्ठ सं. 66

23. -वही-
पृष्ठ सं. 70

24. -वही-
पृष्ठ सं. 75

25. - वही-
पृष्ठ सं. 77

26. -वही-
पृष्ठ सं. 81

27. -वही-
पृष्ठ सं. 85

28. उषा प्रियंवदा - "शेषयात्रा"
पृष्ठ सं. 85-86 पटना - प्रथम संस्करण -1984

29. -वही-
पृष्ठ सं. 86

29*. " 103

30. -वही-
पृष्ठ सं. 142

31. -वही-
पृष्ठ सं. 38

32. उषा प्रियंवदा - "रूकोगी नहीं, राधिका?"
पृष्ठ सं. 69 दिल्ली - प्रथम संस्करण - 1976

33. उषा प्रियंवदा - "पचपन खम्भे लाल दीवारें"
पृष्ठ सं. 106 दिल्ली - चतुर्थ संस्करण 1984

34. उषा प्रियंवदा - "पचपन खम्भे लाल दीवारें"
पृष्ठ सं. 30

35. उर्मिला गुप्ता - "स्वातंत्रोत्तर कथा लेखिकाएँ"
पृष्ठ सं. 328 दिल्ली (काल 1967)

36. उषा प्रियंवदा - "पचपन खम्भे लाल दीवारें"
पृष्ठ सं. 28

37. -वही-
पृष्ठ सं. 29

38. -वही-
पृष्ठ सं. 89

39. -वही-
पृष्ठ सं. 12

40. -वही-
पृष्ठ सं. 10

41. -वही-
पृष्ठ सं. 89

42. -वही-
पृष्ठ सं. 84

43. उषा प्रियंवदा- "पचपन खम्भे लाल दीवारे"
पृष्ठ सं. 11 दिल्ली - चतुर्थ संस्करण - 1984

44. -वही-
पृष्ठ सं. 112

45. -वही-
पृष्ठ सं. 67

46. -वही-
पृष्ठ सं. 28

47. -वही-
पृष्ठ सं. 82

48. उषा प्रियंवद "शेषयात्रा"
पृष्ठ सं. 49 पटना - प्रथम संस्करण 1984

49. -वही-
पृष्ठ सं. 56

50. -वही-
पृष्ठ सं. 19

51. उषा प्रियंवद - "पचपन खम्भे लाल दीवारें"
पृष्ठ सं. 118 दिल्ली - चतुर्थ संस्करण -1984

52. -वही-
पृष्ठ सं. 101

53. भीष्म साहनी, रामजी मिश्र, भगवती प्रसाद निदारिया "आधुनिक हिन्दी उपन्यास" पृष्ठ सु. 272 नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन

संदर्भ ग्रंथ सूची

1§ अवस्थी देवीशंकर – विवेक के रंग

2§ अग्रवाल बिन्दु – हिन्दी उपन्यास में नारी चित्रण

3§ गुप्ता उर्मिला – स्वातंत्र्योत्तर कथा लेखिकाएँ
राधाकृष्ण प्रकाशन – 1967

4§ "दिनकर" रामधारी सिंह – आधुनिक बोध

5§ प्रियंवदा उषा – "पचपन खम्भे लाल दीवारें"
दिल्ली – चतुर्थ संस्करण

6§ प्रियवंदा उषा – "रूकोगी नहीं, राधिका ?"
दिल्ली प्रथम संस्करण 1976

7§ प्रियंवदा उषा – "शेषयात्रा"
पटना – प्रथम संस्करण 1984

8§ मदान इन्द्रनाथ – आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास
राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

9§ §डॉ.§ मधुप घनश्याम – हिन्दी लघु उपन्यास
राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

10§ §डॉ. श्रीमती§ माथुर उमेश – आधुनिक युग की हिन्दी
लेखिकाएँ दिल्ली

11§ §डॉ.§ मोहन नरेन्द्र – आधुनिक हिन्दी उपन्यास

12§ राघव रांगेय – घरौंदे

13§ §डॉ.§ शर्मा राजरानी, हिन्दी उपन्यासों में रूढ़िमुक्त नारी
§पीएच. डी. शोध प्रबंध, 1984, बंबई विद्यापीठ, बंबई§

14§ §डॉ.§ स्वर्णलता, स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास साहित्य की
समाज शास्त्रीय पृष्ठभूमि

15§ साहनी भीष्म, मिश्र रामजी, निदारिया भगवती प्रसाद
– आधुनिक हिन्दी उपन्यास, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली
– प्रथम संस्करण 1980